ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भागीदारी:

कु. सपना मीना
ईमेल - betu25meena@gmail.com

*"You can tell the conditions of a nation
By looking at the status of its woman. (Pt. Nehru)"*

सारांश - इस पेपर में हम आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत महिलाओं को प्राप्त रोजगार के अवसर के बारे में विश्लेषण करेंगे। महिलाओं के लिए सरकार द्वारा कौन कौन सी योजनाएं चलाई जा रही है एवं देश मे महिला उद्यमियों को कौन कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस बारे में गहनता से विमर्श किया गया है। इस पेपर में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान एवं पशुपालन में उनके योगदान को नकारा नही जा सकता। भारत सरकार द्वारा महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही है जिसका अवलोकन इस पेपर में किया गया है। MSME एवं देश की कई बैंकिंग संस्थानों द्वारा महिलाओं को किस प्रकार सहायता प्रदान की जाती है उसका वर्णन भी इस पेपर में किया गया है।
की वर्ड - महिलाएं, आत्मनिर्भर भारत अभियान, कृषि, MSME

आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा भारत सरकार द्वारा 12 मई 2020 को की गई है। इस योजना के तहत 20 लाख करोड रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई है जो कि भारत की जीडीपी का लगभग 10% है। इस घोषणा के पीछे सरकार का उद्देश्य कोविड-19 महामारी से हुए आर्थिक नुकसान की भरपाई करना और देश की अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाना है। सरकार ने आत्मनिर्भर भारत को एक अभियान बना दिया है तथा इसे सफल बनाने के लिए हर तबके को अपना योगदान देना होगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग व स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया जा रहा है। इसके अंतर्गत विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम करना एवं स्वदेशी उद्यमिता को बढ़ावा देना शामिल है जिससे देश की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर बन

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

सके। देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक है कि यहाँ की जनता आत्मनिर्भर बने और वह भी बिना किसी लैंगिक भेदभाव के, क्योकि १३० करोड़ की आबादी में से लगभग ४० करोड़ लोग किसी न किसी रोजगार में लगे हुए है जिनमे महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है जबकि भारत में लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती हैं लेकिन अगर महिलाएं अपने पेरों पर खड़े होना नही सीखेंगी तो फिर देश आत्मनिर्भर केसे बनेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र की बात की जाये तो प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं का योगदान दिखाई नही देता लेकिन महिलाएं कोई काम नही करती ऐसा भी नही है। ग्रामीण भारत में महिलाएं पुरुषो के कदम से कदम मिलाकर साथ निभा रही है उनके बिना न तो पुरुष खेती का काम कर सकता है और न ही पशु पालन। लेकिन महिलाओं के साथ जो सबसे बड़ी समस्या है वो यह है कि महिलाएं आज भी खुले आम बाहर निकलने से, स्वयं के निर्णय लेने से, बैंक जाने से, अधिकारियों से बात करने से डरती है महिलाओं का यह डर, महिलाओं को देश के विकास में सहभागी बनाने की दिशा में रुकावट का कम कर रहा है महिलाओं की सहभागिता के बिना आत्मनिर्भर भारत अभियान सफल नहीं हो सकता।

महिलाओं को आगे लाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे है ताकि महिलाएं उधमी आगे आयें एवं सरकार की योजनाओं से लाभ उठाकर न केवल अपना विकास करें वरन देश को विकास के पथ पर अग्रसर करें। इसके लिए ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर महिलाओं को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। भारत सरकार द्वारा घोषित आर्थिक पैकेज में कुटीर उद्योग, गृह उद्योग व, मझोले उद्योगों (MSMES) पर विशेष बल दिया गया है। इसके तहत महिलाएं न केवल आत्मनिर्भर बनेंगी बल्कि महिलाओं को नई दिशा मिलेगी और रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ेंगे। [1]

---

1. M.S. Swaminathan, the famous agricultural scientist says "some historians believe that it was women who first domesticated crop plants and thereby initiated the art and science 9f farming while out hunting in search of food ,woman started gathering seeds from the native flora and began cultivating those of interest from the point of view of food ,feed,,fodder,fibre and fuel

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

शोध समस्या : आत्मनिर्भर भारत अभियान में महिलाओं की सहभागिता, चुनौतियां व सरकार की इस दिशा में कार्यरत योजनाओं का अध्ययन।

शोध उद्देश्य : 1. भारतीय व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व रोजगार के अवसरों पर प्रकाश डालना।

2. आत्मनिर्भर भारत अभियान की सार्थकता में महिलाओं के पक्ष को उजागर करना।

शोध विधि : विश्लेषणात्मक

ग्रामीण स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान: ग्रामीण स्तर पर आय का प्रमुख स्त्रोत कृषि है। अगर हम भारत की भोगौलिक स्थिति को देखे तो ३२.८ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में से १८.९ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में खेती की जाती है जो कि अमेरिका के बाद दुसरे स्थान पर है।[2] भारत में लगभग 12.78 कृषि जोत महिलाओं के नाम पर है।[3] देश की लगभग 32 % महिलाएं कृषि कार्यो में सलंघन है जिसमें फसलों की रुपाई व कटाई, पशु पालन, दुग्ध व्यवसाय शामिल है ये कार्य अधिकांशतः महिलाओं के द्वारा ही किये जाते है। ग्रामीण इलाकों में अभी भी रोजगार के साधन कम है। अगर पशु पालन व दुग्ध व्यवसाय मे महिलाओं के लिय नवीन रोजगार का सर्जन कर दिया जाएं तो उनकी आमदनी भी बढ़ेगी और भारत की अर्थव्यवस्था को भी संबल मिलेगा।

समस्या :

भारत में कृषि की मजबूत सहायता प्रणाली कृषि श्रमिकों और खेती करने वालों के रूप में महिलाओं को उनके अधिकारों से बाहर करती है। अधिकांश महिला प्रधान परिवार विस्तार सेवाओं, किसानों के समर्थन संस्थानों और उत्पादन परिसंपत्तियों जैसे बीज, जल, ऋण, सब्सिडी, आदि का उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं। कृषि श्रमिकों के रूप में, महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया

[2] https://en.wikipedia.org/wiki/Land_use_statistics_by_country

[3] कृषि जनगणना 2011 के अनुसार

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

जाता है। भारत सरकार द्वारा महिलाओं को स्वाबलंबी बनाने हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे है! जिनमें भारत सरकार द्वारा ग्रामीण महिलाओं के विकास हेतु कुछ योजनाए भी चलाई गई है।

भारत सरकार की योजनाए:

महिला किसान सशक्तिकरण योजना :

महिला किसानों की बढ़ती संख्या को देखते हुए महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (MKSP) को कृषि से जुड़ी महिलाओं की वर्तमान स्थिति मे सुधार करने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए इसकी शुरुआत की गई है. भारत सहित अधिकांश विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण महिलाएँ सबसे अधिक उत्पादक कार्यबल बनाती हैं। 80 % से अधिक ग्रामीण महिलाएं अपनी आजीविका के लिए कृषि गतिविधियों में लगी हुई है!

स्वयं सहायता समहू :समुदाय जिनकी आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं में समानता हो एक छोटे समूह के माध्यम से अपनी-अपनी आवश्यकताओं, समस्याओं, भावनाओं, अपेक्षाओं आदि उम्मीदों को लेकर निरंतर प्रयास करते हैं। अतः अपनी-अपनी प्रक्रिया में उनके उत्साह को निरंतर जागृत करना एक महत्वपूर्ण अंग है।

2) समान स्तर के सदस्य वही सीखने का प्रयास करते हैं जो उन्हें रुचिकर लगता है।

3) इन समान स्तरीय समूहों के सदस्यगण अपने-अपने ज्ञान के प्रति जागरूकता का स्वयं के अंदर की क्षमता को विकसित कर अपने व्यवहार में लाने के प्रति उत्साहित रहते हैं।

4) यह सदस्य-समूह मुख्य रूप से अपने समूह के द्वारा स्वचालित होकर अग्रसर होने का प्रयास करते हैं।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

5) यह समान स्तर के समूह के सदस्यों के साथ-साथ दूसरों को भी विकास की ओर लाना चाहते हैं।

MSME और महिलाएं

सूक्ष्म, लघु , मध्यम उद्योगों के अंतर्गत सूक्ष्म उद्योग सबसे छोटी संस्था है! इसके अंतर्गत उद्योगों के संयंत्र व मशीन लगाने में 1 करोड़ तक का निवेश कर सकते है जिसका टर्नओवर 5 करोड़ होना चाहिए!

लघु उद्योग के अंतर्गत उद्योगों के संयंत्र व मशीन लगाने में 10 करोड़ तक निवेश कर सकते है जिसका टर्नओवर पर 50 करोड़ होना चाहिए!

मध्यम उद्योग के अंतर्गत उद्योगों के संयंत्र व मशीन लगाने में 20 करोड़ तक का निवेश कर सकते है जिसका टर्नओवर 100 करोड़ होना चाहिए! नीचे दी गयी टेबल में MSME के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रो के वर्गीकरण को बताया गया है।

Manufacturing sector:

Micro	Small	Medium
Less than 2.5 million	Rs. 2.5 to 50 million	Rs.50 million to Rs.100 million

Service sectors Investment in equipment:

Micro	Small	Medium
<1 million Rs.	1-20 million Rs.	20-50 million

Source: Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises, 2007

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

महिलाएं किसी भी समाज का आधार स्तंभ हैं। महिलाओ के सशक्तिकरण से ही समाज का सशक्तिकरण हो सकता है। भारत में महिलाओं की आबादी अच्छी खासी है लेकिन संस्कृति व परंपराओं के कारण महिलाएं केवल घरेलू कार्य तक ही सीमित रहती हैं। भारत में आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता वैश्विक स्तर पर महिलाओं की सहभागिता से काफी कम है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत MESMS पर विशेष जोर दिया गया है। जिससे महिलाएं अपनी पहचान बना सके!भारत में अधिकांश महिलाओं ने स्वयं को कुटीर उद्योगों से जोड़ लिया है अधिकांश महिलाओं के द्वारा(मोमबत्ती, अगरबत्ती, फूल माला, बिंदी) बनाने का काम किया जा रहा है। घरेलू स्तर पर (पापड़, आचार ,जैमजेली) बनाना शामिल है मध्यम स्तर पर सिलाई बुनाई संेटर व ब्यूटी पार्लर शामिल है। ये उधोग महिलाओं के लिए न केवल स्वयं विकास के माध्यम है बल्कि आर्थिक सहभागिता के भी माध्यम है जिसका संचालन महिलाएं घरेलू कार्यो के करने बाद भी कर सकती है।

क्षेत्र विशेष आधारित महिला उद्योगों का वर्गीकरण :

		Female	**Male**
1.	**Micro**	14.19	85.81
2.	**Small**	5.06	94.94
3.	**Medium**	4.21	95.79
4.	**All**	13.72	86.28

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

Source: MSME census Report fourth (2007-2008)

सरकार द्वारा एमएसएमई के लिए बिना गारंटी वाले लोन का ऐलान किया गया है जिसके तहत महिलाएं कुटीर उद्योग आसानी से डाल सकती हैं इससे आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी और महिला सशक्तिकरण के साथ रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ेंगी!

उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएं :

भारत में महिला उद्यमियों की बात की जाए तो लगभग 8% महिलाएं ही सफल उद्यमी है। भारत सरकार द्वारा महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के लिए बहुत सी योजनाएं चलाई गई है।

1.**अन्नपूर्णा योजना:** इस योजना का शुभारम्भ राजस्थान सरकार द्वारा 15 दिसंबर 2016 को किया गया। इस योजना में अन्नपूर्णा रसोई वैन के माध्यम से मात्र रु 5 में नाश्ता तथा मात्र रु 8 में पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस योजना से महिलाओ को भी रोजगार मिलेगा व जरूरत मन्दो को पौष्टिक खाना मिलेगा

2.**महिला स्वरोजगार योजना:** महिलाओं को प्रोत्साहित करने और उनकी व्यावसायिक यात्रा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, हिमाचल प्रदेश सरकार ने इस योजना की शुरूआत की है। दूरदर्शी योजना के तहत, सरकार समाज के पिछड़े वर्गों - गरीब महिलाओं को रोजगार प्रदान करती है। महिला सशक्तीकरण को देखते हुए, इस फ्लैगशिप योजना को पूरे राज्य में कई तरह के चैनल पार्टनर्स द्वारा लागू किया जा रहा है।

3.**ओरियंटल महिला विकास योजना:** ओरिएण्टल बैंक की यह ओरिएंट महिला विकास योजना भारत में ओरिएण्टल बैंक द्धारा चलाई गयी है | इस योजना के

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

अंतर्गत केवल महिलाओ को ही शामिल किया जाता है जो कि किसी व्यवसाय में 51% शेयर की हक़दार होती है | इस योजना के माध्यम से, महिला लेनदार को ब्याज दर पर 25 प्रतिशत तक छूट मिल सकती है।

4.**भारतीय महिला बैंक व्यवसायिक**: यह योजना उन महिला उद्यमियों के लिए लागू की गई है, जो खुदरा क्षेत्र में अपना नया व्यवसाय और एसएमई शुरू करना चाहती है. इसके लिए अधिकतम 20 करोड़ तक लोन उपलब्ध कराया जाता है। इस पर 0.25 प्रतिशत की छूट दी जाती है। इस लोन पर ब्याज दर 10.15 प्रतिशत के आसपास होता है|

6.**महिला उद्यम निधि योजना:** लघु उद्योग को बढ़ावा देनेवाला यह लोन पंजाब नेशनल बैंक द्वारा दिया जाता है. इसके तहत महिला उधमी को 10 लाख तक का लोन मिल सकता है, जिसे 10 साल के भीतर भरना होता है. ज़्यादातर योजनाओं की तरह इसका ब्याज दर भी मार्केट रेट पर आधारित होता है, जो समय-समय पर बदलता रहता है. इसके अंतर्गत ब्यूटीपार्लर, डे केयर सेंटर, ऑटोरिक्शा, टू व्हीलर या कार के लिए स्पेशल लोन की सुविधाएं हैं.

7.स्त्री शक्ति योजना: यहा योजना विशिष्ट रूप से महिलाओं को वित्तीय सहायता और प्रसंस्करण में रियायतें प्रदान करने के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा शुरू की गई एक योजना है। इसके तहत स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा जो मापदंड बनाए गए हैं उसमें उद्यमी के पास महिलाओं के स्वामित्व वाली पूंजी का 50% या उससे अधिक होना चाहिए। यानी इस योजना के तहत ऐसे उद्यमियों को लोन दिया जाएगा जिसका उद्यम महिला के स्वामित्व में हो ।

निष्कर्ष: महिला किसान निर्माता संगठनों के माध्यम से महिला कृषकों का विकास किया जा सकता है। महिला उद्यमियों की अगर बात की जाए तो उनका झुकाव विशेषता कुछ ही क्षेत्रो की ओर होता है जिसमे फूड टेक्नोलॉजी व फैशन इत्यादि शामिल है अतः महिलाओं में अन्य क्षेत्रों के प्रति रुझान पैदा करना भी एक चुनौती है इसके लिए अन्य क्षेत्रों के प्रति आकर्षित स्कीमों व अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है ऑनलाइन सेक्टर में भी महिलाओं महिलाओं की भागीदारी लगभग

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

30% है जो कि संतोष पूर्ण नहीं है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व आत्मनिर्भर अभियान के तहत उठाए गए कदमों से निश्चित ही भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा इसके साथ ही महिलाओं को उचित प्रशिक्षण व कौशल भी प्रदान किया जाना आवश्यक है जिससे ना केवल कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की समझ बढ़ेगी बल्कि उत्पादन में भी लाभ होगा उद्यमिता के क्षेत्र में भी महिलाएं कुशल बनेगी।

सन्दर्भ सूची -

1. Prasad & Singh "participation of woman in agriculture". Indian journal of agriculture economies, volume xxxi, No.3, year 1999.
2. Ministry of agricultural & farmers welfare.
3. Indian Census, 2011.
4. MKSP.gob.in
5. Vikaspedia.
6. Ministry of Micro, small and medium Enterprises 2020
7. Rajsthan.gov.in
8. krishijagran.com
9. himachalpradesh.gov.in
10. Ministry of Rural Development, GOI, New Delhi

Copyright @ 2020 Authors